दीक्षा-नक्षत्र-फलादेशाः

(आचार्य महावीर कीर्तिजी की डायरी से)

1. **अश्विनीनक्षत्रे दीक्षितः** आचार्यो भवति पञ्चपुरुषाणां दीक्षादायको मिष्ठान्नभुक्तः अपमृत्युद्वयमविना चतुचत्वारिंशद्वर्षण जीवित।
2. **भरणीनक्षत्रे दीक्षितोः** अनशनादितपः कारकः, व्रतभ्रष्टो भूत्वा पुनर्व्रतं स्वीकृत्य द्विषष्ठी वर्षाणि जीवति।
3. **रोहिण्यां दीक्षितः** मिष्ठान्नभोक्ताः, विदेशपरिभमणशीलः, अपमृत्युद्वायेन वंचितः व्रतभ्रष्टो भूत्वा, पुनः व्रतं स्वीकृत्य सप्तति वर्षाण जीवति।
4. **मृगशिरे दीक्षितः** आचार्यो भवति द्वाविंशति पुरुषाणां दीक्षादायकः समस्तसंघाधरो भूत्वा सप्तति वर्षाणि जीवित। (उत्तमातिउत्तम)
5. **आद्वायां दीक्षितो** : जितेन्द्रिया द्वाषष्ठी वर्षाणि जीवति। (मध्यम)
6. **पुनर्वसुदीक्षिता** : पञ्चवर्षाण्यन्तरं तपश्चुत्वा भ्रष्टो भूत्वा पुनर्व्रतं स्वीकृत्य तिसणामार्यकाणां दीक्षादायकः सप्तति वर्षाणि जीवति।
7. **पुष्यनक्षत्रे दीक्षितः** तपः कृत्वा, आचार्यः भवति पञ्चपुरुषाणां दीक्षादायकः मेधवी विंशति (शत) वर्षाणि जीविति। (उत्तमाति उत्तम)
8. **मघायां दीक्षितः** प्रशस्ताचाखान् विनीतः षष्ठ वर्षाणि जीवति। (मध्यम)
9. **आश्लेषायां दीक्षितोः** विदेशगामी दुखितः गुरुविनीता, व्रत तपश्च्युतोभूत्वा-षष्टी वर्षाण्यन्तरं सर्पदंष्ट्रो म्रियते।
10. **पूर्वापफाल्गुनीयां दीक्षितः** पंचदशपुरुषाणां दीक्षादायकः व्रतभ्रष्टो भूत्वा पुनः व्रत स्वीकृत्य नवति वर्षाणि जीवति।
11. **उत्तरापफाल्गुनीयां दीक्षितः** आचार्यः भवति अशीति वर्षाणि जीवति, मधुराहार भोजी।
12. **हस्तायां दीक्षित :** आचार्यः भवति पञ्चस्त्रीणां पञ्चपुरुषाणां दीक्षागुरु भूत्वा शत वर्षाणि जीवति।
13. **स्वातौ दीक्षितः** षष्ठि वर्षाणि जीवति।
14. **चित्रायां दीक्षितो** : शीति वर्षाणि जीवति एके आयात्तिदिक्षां।
15. **विशाखायां दीक्षितः** तपश्चुत्वा अशीति वर्षाणि जीवति।
16. **अनुराध दीक्षितः** आचार्यः सप्ततिपुरुषाणां दीक्षागुरु भूत्वा नवति वर्षाणि जीवति मिष्ठान्नभोजि। ;आर्यिका-उत्तमद्ध
17. **ज्येष्ठायां दीक्षितः** एकाग्री उग्रतपस्वी षट्पञ्चाशत् वर्षाणि जीवति। (मध्यम)
18. **मूले दीक्षितोः** मिष्ठान्नभोक्ता अपमृत्युत्रयच्युतो भूत्वा नवति वर्षाणि जीवति।
19. **पूर्वाषाढायां दीक्षितः** उपसर्गत्रय सहिष्णु भवित तपच्युत्वा पुनः व्रतं स्वीकृत्य अशीति वर्षाणि जीविति।
20. **उत्तराषाढ़ायां दीक्षितो** : तपश्च्युत्वा अतिरोगात्दषापमृत्युतोभूत्वा स्त्रीद्वय पुरुषपंचकं च दीक्षियित्वा षष्टि वर्षाणि जीवित।
21. **श्रावणे दीक्षितः** द्वादश पुरुषाणां गुरु, मिष्ठान्नभोक्ता, विंशत्युत्तरा शतवर्षाणि जीविति। (आर्यिका-उत्तमाति उत्तम)

22. **धनिष्ठायां दीक्षितः** आचार्यः भवति अशीति वर्षाणि जीवति। (उत्तम, मध्यम)
23. **शततारे दीक्षितः** पञ्च पुरुषाणां दीक्षा गुरु भवति। नवति वर्षाणि जीवति।
24. **पूर्वाभाद्रपदो दीक्षितः** द्वादश पुरुषाणां दीक्षा गुरु। अशीति वर्षाणि जीवति। (मध्यम)
25. **उत्तराभाद्रपदे दीक्षितः** मिष्ठान्नभोजी द्वादश पुरुषाणामार्यकाणां गुरुः। अशीति वर्षाणि जीवति। (आर्यिका-मध्यम)
26. **रेवत्यां दीक्षितो :** मिष्ठान्नभोजी आचार्यो भूत्वा विंशति वर्षाणि जीवति। (उत्तम)
27. **कृतिकायां दीक्षितः** आर्चायः भवति पञ्च पुरुषाणां दीक्षादायकः भ्रष्ट व्रतवान्, षण्णवति वर्षाणि जीवति।

नोटः जिस नक्षत्र के आगे 'आर्यिका' शब्द लिखा है उस नक्षत्र में आर्यिका दीक्षा, क्षुल्लिकादीक्षा और मुनि, क्षुल्लक दीक्षा आदि सब दीक्षा हो सकती है। ये नक्षत्र स्त्री, पुरुष दोनों के लिए हैं।

दीक्षामुहूर्तावलि

मास : चै., वै., श्रा., आश्वि., का. मार्ग, माघ., पफा., एतनमासेषु शुभम् नाधिमासे।
नक्षत्र : आश्वि., रो., उ., 3 चि., रे., ऽनु., पुष्य., स्वाति., पुन., मू., श्र., ध., श., एषुसत्।
वासरा : सू., चं., बु., वृ., शु., एषामहिलभ्रदादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम्।
तिथय : 2/3/5/7/10/11/12 एतासु तिथिश्रेष्ठं कृष्णेवावत्पञ्चमींसत्।
शुद्धलग्न : 2/3/4/5/6/7/9/12 एत रयाङ्गेषुचन्द्रतारानुकुलेसति शुभम्।
लग्न : लग्नात 3/6/11 एषुपापैः 1/4/5/7/6/10 एषुशुभैश्चोत्तमम्।
शुद्धिश्च :अष्टम्यां संक्रान्तौ रविचन्द्रोपरागेचोत्तंम्। गुरु-शुक्रयोरुदये श्रेष्ठम्।

लग्न

ज. चर	उ. स्थिर	म. द्विस्वभाव
मेष	वृषभ	मिथुन
कर्क	सिंह	कन्या
तुला	वृश्चिक	धनु
मकर	कुम्भ	मीन

इन लग्नों में दीक्षा कभी नहीं देना चाहिए जघन्य
स्थिर लग्न में दीक्षा देना उत्तम है।
इन लग्नों में दीक्षा देना मध्यम है।

दीक्षा का सामान

केशलोंच की सामग्री- केशलोंच के लिए राख, हाथ पैछने के लिए दो कपड़े, थाली एवं कटोरा आदि।

मंगल स्नान- उवाटन की सामग्री एवं तेल आदि।

विनोली सामग्री- शृंगार की सामग्री, सेरवानी, सॉपफा, हार माला, मेहन्दी आदि।

गणधर वलय विधन/शान्ति विधन- सामग्री वाला- नारियल-60 /नारियल-150 तथा जितने लोग विधन में बैठे है। तदानुसार पूजन द्रव्य।

दीक्षा सामग्री- गंदोध्क-दही- थोड़ा-सा भस्म (राख) नारियल-11, कपूर-10 ग्राम, मिश्री-10 ग्राम, केशर 10 ग्राम, बड़ी सुपारी- 5 ठोस, नारियल की काचली अगर मुनि, आर्यिका दीक्षा हो तो 13 तथा ऐल्लक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका दीक्षा हो तो 11, चावल-5 किलो, कपड़ा-1 गज, पीच्छी 1, कमण्डलु-1, शास्त्र-1, दूर्वा। अगर आर्यिका दीक्षा हो तो 16 हाथ की दो साड़ी, अगर क्षुल्लिका दीक्षा हो तो 16 हाथ की दो साड़ी, 2.5 गज के दो दुपट्टद्धा, व भोजन के लिए एक कटोरा, अगर ऐलक दीक्षा हो तो दो लंगोटी, अगर क्षुल्लक दीक्षा हो तो 2.5 गज के दो दुपट्टद्धा (खंडवस्त्र) व दो लंगोटी, भोजन के लिए एक कटोरा।

मोक्ष शुद्धि मुक्ति करण सामग्री- द्राक्षी सूखी 500 ग्राम, लोंग- 50 ग्राम, इलायची 50 ग्राम, खारेक-500 ग्राम, खड़ी हल्दी-500 ग्राम, छोटी सुपारी-500 ग्राम, चावल - 10 किलो।

दीक्षा विधि-

1. यद्यपि प्राचीनकाल में दीक्षा तिथि मूहुर्त आदि की आवश्यकता नहीं होती थी। किन्तु बाद (पंचम काल) में आचार्यों ने इसकी आवश्यकता समझी तद्नुसार उसका वर्णन दिया। जो अतियंत उचित है।

2. दीक्षादायक आचार्य को चाहिए की वे मूहुर्त देखकर/किसी ज्योतिषी से दिखाकर ही दीक्षा दे क्योंकि दीक्षा-दीक्षित साधकों की जीवनभर की साधना है। जिसे सोच अच्छी तरह से समझकर तथा परीक्षा कर ही दीक्षा देना चाहिए। फिर दीक्षित शिष्यों का पुण्य-पाप को कौन देख सकता है।

दीक्षा मुहूर्त-

दीक्षा	**ग्राह्य नक्षत्र**	**त्याज्य नक्षत्र**
मुनि	भरणी, उत्तराफाल्गुनी, मघा, चित्रा, विशाखा, पूर्वभाद्रपद, रेवती	रोहिणी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, स्वाती, कृतिका
आर्यिका	अश्विनी, पूर्वफाल्गुनी, हस्ता, स्वाती, अनुराधा, मूल, उत्तरासाढ़ा, श्रवण, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद	भरणी, कृतिका, पुष्य, आश्लेषा, आर्द्रा, पुनर्वसु
एल्लेक/क्षुल्लक		
क्षुल्लिका	पूर्वभाद्रपद, मूल, धनिष्ठा, विशाखा, श्रवण	

अथ दीक्षा ग्रहण क्रिया

मुनि दीक्षा लघु विधि-

1. **अथ दीक्षा केशलोंच प्रतिष्ठापन क्रियायाम् ''सिद्ध भक्ति'' कायोत्सर्गं करोमि**

सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख होकर सिद्ध भक्ति का कायोत्सर्ग करे तथा सिद्ध भक्ति करें (वृहद् सिद्ध भक्ति पृ. नं. ..... पर देखें)

अथ दीक्षा केशलोंच प्रतिष्ठापन क्रियायाम् ''योगी भक्ति'' कायोत्सर्गं करोमि

योगी भक्ति कायोत्सर्ग कर योगी भक्ति पढ़े (वृहद् योगी भक्ति पृ. नं. ..... पर देखें) तदन्तर केशलोंच प्रारम्भ करें।

केशलोंच पूर्ण होने पर।

अथ दीक्षा केशलोंच निष्ठापन क्रियायाम् ''सिद्ध भक्ति'' कायोत्सर्गं करोमि

सिद्ध भक्ति का कायोत्सर्ग करे तथा सिद्ध भक्ति पढ़े (वृहद् सिद्ध भक्ति पृ. नं. ..... पर देखें)

2. **नाग्नप्रदानं (सम्पूर्ण परिग्रह का त्याग करें/करायें)**
3. **नामकरणं (दीक्षित साधक का नाम करण करें।)**
4. **पिच्छीप्रदानं (मयूर पिच्छी प्रदान करें।)**
5. **शास्त्रप्रदानं (धर्म ग्रंथ प्रदान करें।)**
6. **कमण्डलुप्रदानं (कमण्डल प्रदान करें।)**
7. **दीक्षा विधि के बाद निम्न श्लोक पढ़ कर व्रत संस्कार करें-**

व्रतसमितीन्द्रियरोधाः पंच पृथक् क्षितिशयो रदाघर्शः,
स्थितिसकृदशनेलुञ्चा-वश्यकषट्केविचेलताऽस्नानम्।
इत्यष्टविंशति मूल-गुणान निक्षिप्य दीक्षिते,
संक्षेपेण सशीलादीन्, गणी कुर्यात्प्रतिक्रमम।।

अथवा

वदसमिदिंदियरोधो, लोचावासयमचेलमण्हाणं।
खिदिसयणमदंतवणं, ठिदिभोयणमेयभत्तंच।।1।।

वृहद् दीक्षा विधि (मुनि-आर्यिका दीक्षा विधि)

1. दीक्षा के एक दिन पूर्व भोजन के पश्चात् बर्तन आदि का त्याग करके।
2. विधि पूर्वक (यदि मुनि दीक्षा हो तो खड़े होकर अपने हाथ में मुनि की तरह आहार ग्रहण करें। यदि आर्यिका दीक्षा हो तो बैठकर अंजुलि बांदकर आर्यिकाओं की तरह आहार ले, यदि ऐल्लक दीक्षा होतो बैठककर अंजुलि बांदकर आहार ग्रहण करें। क्षुललक/क्षुल्लिका दीक्षा होतो क्षुल्लक/क्षुल्लिका की तरह कटोरे में) आहार ग्रहण करें।
3. आहार के पश्चात् - जिन मंदिर/चैत्याल्य में जाकर वृहद आहार प्रत्याख्यान प्रतिष्ठापन (उपवास ग्रहण) विधि करें।

अथ आहार प्रत्याख्यान/उपवास प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण ''सिद्धभक्ति'' कायोत्सर्गं करोमि। (वृहद सिद्धि भक्ति देखें पृ.....)

4. पश्चात् गुरु के पास जाकर उन्हें नमस्कार करें। उपवास करें ग्रहण कर आचार्य शान्ति एवं समाधि भक्ति पढ़कर नमस्कार करें।

अथ आहार प्रत्याख्यान/उपवास प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण ''आचार्य भक्ति'' कायोत्सर्गं करोमि। (आचार्य भक्ति देखें पृ.....)

अथ आहार प्रत्याख्यान/उपवास प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण ''शान्ति भक्ति'' कायोत्सर्गं करोमि। (शान्ति भक्ति देखें पृ.....)

अथ आहार प्रत्याख्यान/उपवास प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण ''समाधि भक्ति'' कायोत्सर्गं करोमि। (समाधि भक्ति देखें पृ.....)

5. दीक्षा दान में परिजन/पुरजन साधर्मी श्रावक यथा शक्ति शान्ति विधान अथवा गणधर वलय विधान करें।
6. दीक्षा के दिन प्रातः केशलोंच विधि की जा सकती है अथवा दीक्षा के समय भी केशलोंच विधि की जा सकती है।
7. केशलोंच के बाद दीक्षार्थि को मंगल स्नान करें (उवटन, तेल आदि से स्नान करायें।)
8. दीक्षार्थी का यथा योग अंलकार (शृंगार करें)
9. महामहोत्सव (विनोलि) के साथ चैताल्य में लायें।
10. दीक्षार्थी अपने परिजनों के साथ **देवशास्त्र गुरु की पूजा** करें।
11. वैराग्य भावना वृहदक दो शब्द कहें।
12. सबसे क्षमायाचना कर गुरु के सन्मुख पहुँचे।

13. गुरु संघ के आगे खड़ा होकर क्षमा याचना कर दीक्षा की याचना (प्रार्थना) करें।

14. गुरु आज्ञा होने पर सौभाग्यवती स्त्रीयाँ दीक्षा संस्कार स्थान पर चावल से स्वास्तिक बनायें।

15. स्वास्तिक के ऊपर समान लम्बाई-चौड़ाई वाला (1 × 1 मीटर) सफेद कपड़े में केशर से स्वास्तिक बनायें।

16. उक्त कपड़े को चावल के स्वास्तिक पर एक साथ बिछायें। (चारों कोनों को दो या चार लोग पकड़कर एक साथ बिछायें)

17. दीक्षार्थी उस पर अपने भरे स्वर के अनुसार कदम को आगे रखकर आगे बैठे अर्थात् दीक्षार्थी का जो स्वर चल रहा है। उस तरफ का पैर आगे करके वस्त्र पर बैठे। किन्तु यदि दोनों स्वर चल रहे हो तो ठहरे जब कोई एक स्वर चले तभी बैठे।

18. दीक्षार्थी पूर्व दिशा की ओर मुखकर करे पद्मानसन से या पर्यांकासन से बैठे।

19. गुरु उत्तर दिशा की ओर मुखकर के बैठे।

20. सब से पहले गुरु संघ से अनुमति लें।

21. दीक्षार्थी का केशलोंच प्रारम्भ करें।

दीक्षा विधि प्रारम्भ

केशलोंच प्रतिष्ठापन विधि-

1. केशलोंच के लिए पूर्व दिशा में मुख करके स्थिर आसन से बैठे।
2. केशलोंच के लिए राख, थाली, कटोरी एवं हाथ पौछने का कपड़ा रखें।
3. गुरु आज्ञा लेकर स्थिर आसन पद्मासन या पर्यंकासन लगावें।

अथ वृहद दीक्षा केशलोंच प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''सिद्धभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं

4. विधिवत् कायोत्सर्ग करे।

अथ वृहद दीक्षा केशलोंच प्रतिष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''योगी भक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं

5. विधिवत् कायोत्सर्ग करे।

आचार्य- गंधोदक, जल को शांति मंत्र के द्वारा तीन बार मंत्रित कर दीक्षार्थी के सिर पर सिंचन करें/जल की धारा दें।

शांति मंत्र -

मंत्र ऊँ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष-कल्मषाय दिव्यतेजो-मूत्तेये नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकाय सर्वविघ्न-प्रणाशनाय सर्वरोगाप-मृत्यु-विनाशनाय, सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्व-क्षामडामर-विनाशनाय ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा (दीक्षित व्यक्ति का नाम) सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

6. आचार्य दीक्षार्थी के सिर को बांये हाथ से स्पर्श करें।

7. अक्षतों (सफेद चावलों) को सिर पर रखते हुए वर्धमान मंत्र पढ़े।

वर्धमान मंत्र-

ऊँ णमो भयवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं, पायालं, लोयाणं, भूयाणं, जये वा, विवादे वा, थंभणे वा, रणंगणे वा, रायंगणे वा, मोहेण वा, सव्वजीवसत्ताणं, अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा।

8. आचार्य भस्म पात्र को हाथ में लेकर निम्न मंत्र पढ़े-

मंत्र - ऊँ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं
रत्नत्रय-पवित्रीकृ त्तोत्तमांगाय, ज्योतिर्मयाय, मतिश्रुतावधिमनः पर्यय केवलज्ञानाय, अ सि आ उ सा स्वाहा।

9. कर्पूर मिश्रित भस्म (राख, दही, मिश्री, दूर्वा) को दीक्षार्थी के सिर पर पाँच स्थानों पर रखें।

प्रथम केशोत्पाटन मंत्र - ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा स्वाहा।

10. तद्नानुसार निम्न मंत्र बोलकर आचार्य अपने हाथ से दीक्षार्थी के (दायें से बायीं ओर) क्रमशः पंचमुष्ठी केशलोंच करें।

ऊँ ह्रां, अर्हदेभ्यो नमः, ऊँ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः, ऊँ ह्रूं सूरिभ्यो नमः ऊँ ह्रौ पाठकेभ्यो नमः, ऊँ ह्रः सर्वसाधुभ्यो नमः अन्य कोई भी केशलोंच करें।

11. केशलोंच के बाद केशलोंच निष्ठापन विधि करें।

केशलोंच निष्ठापन विधि-

अथ वृहद दीक्षा केशलोंच निष्ठापन क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''सिद्धभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं।

कायोत्सर्ग कर सिद्ध भक्ति पढ़े। (सिद्ध भक्ति देखें पृ. ....)

12. दीक्षार्थी सिर धोकर तथा पाँव छूकर गुरु भक्ति (आचार्य वंदना करें) करें। (आचार्य वंदना देख पृ.....)

13. गुरु आज्ञा पूर्वक वस्त्र आभूषण यज्ञोपवित इत्यादि समस्त परिग्रह का त्याग करें।

14. उसी अवस्था में गुरु से दीक्षा संस्कार देने की पुनः याचना करें।

15. पश्चात् गुरु दीक्षार्थी के सिर पर ''**श्री**'' लिखें।

16. निम्न मंत्र बोलकर आचार्य दीक्षार्थी के सिर पर 108 बार लोंग छेपण करते हुए मंत्र जाप करें।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा ह्रीं स्वाहा।

17. आचार्य दीक्षित शिष्य की अंजुलि (दोनों हाथ को मिलाकर उसमें) में **केसर, कपूर, श्रीखण्ड** के द्वारा **''श्री''** लिखे।

18. श्री के चारों दिशाओं में क्रमशः पूर्व में 3, दक्षिण में 24, पश्चिम 5, उत्तर में 2 लिखते हुए निम्न श्लोक पढ़े।

श्लोक- रयणत्तयं च वंदे, चउवीसं जिणे च सव्वदा वंदे।
पंचगुरुणां वंदे, चारण चरणं सदा वंदे।

19. पश्चात्- चावलों के द्वारा तीन बार दीक्षार्थी की अंजुलि भरते हुए निम्न मंत्र पढ़े।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः, ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः, ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः

20. अंजुलि के चावलों पर- **5 बड़ी सुपारी, 5 हल्दी तथा 1 श्री फल** रखें।

21. सिद्ध भक्ति, चारित्र भक्ति तथा योगी भक्ति पढ़कर निम्न गाथा बोलकर व्रत दें।

वद-समिदिंदिय-रोधो, लोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेय-भत्तंच।।1।।

22. उक्त श्लोक पढ़कर निम्न मंत्र बोलते हुए 28 मुलगुण के संस्कार करते हुए निम्न मंत्र तीन बार पढ़े-

मंत्र - 'सम्यक्त्वपूर्वकं दृढ़व्रतं सुव्रतं समारूढं ते भवतु' -

23. शान्ति भक्ति पढ़े- (शान्ति भक्ति देख पृ.....)

24. पश्चात् आशी श्लोक पढ़कर दीक्षार्थी को आशीर्वाद दें

कल्याणमस्तु कमलाभिमुखी सदास्तु,
दीर्घायुरस्तु कुल गोत्र समृद्धिरस्तु।
आरोग्यमस्त्वभिमतार्थ फलाप्तिरस्तु,
भद्रं तवास्तु जिन पुङ्गव भक्तिरस्तु।

25. तद्नानूसार दीक्षार्थी की अंजुलि में स्थित चावलों को मुख्य पात्रों को दिलायें।

26. पश्चात् दीक्षार्थी के सिर पर लंवगों, पुष्पों से निम्न मंत्र पढ़ते हुए 16 संस्कारों को आरोपण करें।

सौलह संस्कार-

1. **अयं सम्यग्दर्शनसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
2. **अयं सम्यग्ज्ञानसंस्कार इन मुनौ स्फुरतु।**
3. **अयं सम्यक्चारित्रसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
4. **अयं बाह्याभ्यंतरतपः संस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
5. **अयं चतुरंगवीर्यसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
6. **अयं अष्टमातृकामंडलसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
7. **अयं शुद्धयष्टकावष्टंभसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
8. **अयं अशेषपरीषहजयसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
9. **अयं त्रिकरणासंयम निवृतिशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
10. **अयं त्रियोगासंगमनिवृत्तिशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
11. **अयं दशासंयमनिवृत्तिशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
12. **अयं चतुः संज्ञानिग्रहशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
13. **अयं पंचेन्द्रियजयशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
14. **अयं दशधर्मधारणशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
15. **अयं अष्टा दशसहस्रशीलतासंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**
16. **अयं चतुरशीतिलक्षणसंस्कार इह मुनौ स्फुरतु।**

27. पुष्प हाथ में लेकर के नामकरण संस्कार करें :

ऊँ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं'

ऊँ परमहंसाय परमेष्ठिने हंस हंस हं हां हिं हीं हूं हैं हौं हः। जिनाय नमः जिनं स्थापयामि संवौषट्,

दीक्षार्थी के मस्तिक पर पुष्प छेपण करें तथा निम्नलिखित गुवा ंवली पढ़ते हुए नामकरण करें।

28. **अथ गुर्वावलीं**

श्री मूल-संघे, कुन्दकुन्दाम्नाये, बलात्कार-गणे, सरस्वती-गच्छे, नन्दी-संघस्य परम्परायाम्, श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री - महावीरकीर्तिआचार्या-जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विरागसागराचार्य जातास्तत् शिष्या... अहम् (अपना नाम बोलना) जाताः।

जम्बूवृक्षोपलक्षित जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे, आर्य खण्डे भारतदेशे..... प्रान्ते....नगरे 1008 श्री....जिन-चैत्यालयमध्ये, अद्य, वीर निर्वाण सं..... वि.सं..... मासोत्तममासे.... मासे.... पक्षे.... शुभ तिथौ.... वासरे पौर्वाह्लिक/आपराह्लिक काले, दीक्षा अवसरे त्वं (दीक्षार्थी का नाम रखते हुए) मम शिष्यः कल्याणभागि भवः (भूयात्)।

29. दीक्षार्थी को निम्न मंत्र बोलते हुए पिच्छी, शास्त्र एवं कमण्डल प्रदान करें।

संयमोपकरण मंत्र- आचार्य- पिच्छी को गंधोदक से सिंचितकर केशर से स्वास्तिक लिखें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए दोनों हाथ से पिच्छीकाप्रदान करें। दीक्षार्थी भी गुरु के हाथ से दी गई पिच्छी को दोनों हाथ से ग्रहण करें। (यदि कोई दाता पूर्व निर्धारित हो तो वह भी हाथ लगाये।)

ऊँ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं'

भो अन्तेवासिन! षड्जीवनिकायरक्षणाय मार्दववादिगुणोपेतमिदं पिच्छिकोपकरणं गृहाणं गृहाणेति।

आचार्य- शास्त्र पर केशर से स्वास्तिक लिखें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए दोनों हाथ से दीक्षार्थी को शास्त्रप्रदान करें। दीक्षार्थी भी गुरु के हाथ से दीया गया शास्त्र को दानों हाथ से ग्रहण करें। (यदि कोई दाता पूर्व निर्धारित हो तो वह भी हाथ लगाये।)

ऊँ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं'

मतिश्रुतावधि मनः पर्यय-केवलज्ञानाय द्वादशांगश्रुताय नमः। भो अन्नेवासिन्! इदं ज्ञानोपकरणं गृहाण गृहाणेति।

आचार्य- कमण्डल को गंधोदक से सिंचितकर केशर से स्वास्तिक लिखें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए बायें हाथ से दीक्षार्थी को कमण्डल प्रदान करें। दीक्षार्थी भी गुरु के हाथ से दीया गया कमण्डल बायें हाथ से से ग्रहण करें। (यदि कोई दाता पूर्व निर्धारित हो तो वह भी हाथ लगाये।)

ऊँ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं'

रत्नत्रयपवित्रीकरणांगाय बाह्याभ्यनतर मल-शुद्धाय नमः भो अनतेवासिन् इदं शौचोपकरणं! गृहाण गृहाणेति।

29. पश्चात् आचार्य एवं दीक्षार्थी समाधि भक्ति पढ़े।
30. तदनानुसार नव दीक्षित मुनि गुरु को तथा अन्य मुनियों को नमस्कार कर बैठ जाये किन्तु जबतक व्रतारोपण क्रिया नहीं हुई है तब तक कोई भी नव दीक्षित मुनि को नमस्कार न करें।
31. प्रमुख दाता उत्तम फलों को आगे रखकर **नमोऽस्तु** कहकर प्रमाण करें।
32. उसी पक्ष में अथवा दूसरे पक्ष में शुभ मुहूर्त पर आचार्य नव दीक्षित मुनि के लिए व्रतारोपण करें।
33. रत्नत्रय पूजा करके पाक्षिक प्रतिक्रमण पाठ पढ़े।
34. आचार्य- पाक्षिक नियम ग्रहण करने के पहले निम्न पाठ पूर्वक पूर्ववत् श्लोक पढ़कर के व्रत दें।

वद-समिदिंदिय-रोधो, लोचावासय-मचेल-मण्हाणं।
खिदि-सयण-मदंतवणं, ठिदि-भोयण-मेय-भत्तंच।।1।।

35. नियम ग्रहण करते समय यथा योग्य एक तप (पल्यविधान णमोकार, कर्मदहन आदि व्रत) दें।
36. दाता आदि श्रावक भी एक-एक तप ग्रहण करें।
37. अन्य मुनिजन नवदीक्षित मुनि के लिए प्रतिवंदना करें।

मुखि शुद्धि मुक्तिकरण विधि-

1. एक थाली में 13, 5 अथवा 3 कचोलीका (आधा गोला) में लोंग, इलायची, सुपारी, हल्दी, किसमिस, छुहारा, चावल, आदि रखकर उस थाली को गुरु के सनमुख रखें। पश्चात् निम्न भक्तियाँ पढ़े-

अथ मुखशुद्धि-मुक्तिकरणं पाठ क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''सिद्धभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं। (सिद्ध भक्ति देखें पृ.....)

अथ मुखशुद्धि-मुक्तिकरणं पाठ क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''आचार्यभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं। (आचार्य भक्ति देखें पृ.....)

अथ मुखशुद्धि-मुक्तिकरणं पाठ क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''शांतिभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं। (शांति भक्ति देखें पृ.....)

अथ मुखशुद्धि-मुक्तिकरणं पाठ क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''समाधिभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं। (समाधि भक्ति देखें पृ.....)

आचार्यगण अपने धर्मोपदेश के द्वारा सभी को आशीर्वाद दे। सभा का विसर्जन करें। समिति के लोग आभार प्रकट करते हुए आगंतुक अतिथियों का यथासम्भव सत्कार करें।

।। इति वृहद दीक्षा विधि।।

लघु क्षुल्लक दीक्षा विधि
(ऐल्लक-क्षुल्लक, क्षुल्लिका दीक्षा विधि)

1. दीक्षार्थी आचार्य श्री के लिए दीक्षा के लिए निवेदन करे।
2. आचार्य दीक्षार्थी पात्रता को ध्यान में रखते हुए स्वीकृति देते हुए यथा अवसर शुभमुहूर्त में दीक्षा दें।
3. लघु दीक्षा उन दीक्षार्थियों को दी जाती है जिनकी वृहद दीक्षा की अनुकूलता नहीं बन पाती। (अर्थात् समाधि जैसी अपरिहारि परिस्थति होती है तब)
4. लघु दीक्षा के समय आचार्य सिद्धभक्ति, योगी भक्ति पढ़े।
5. दीक्षार्थि के वस्त्र परिवर्तन करायें। (अर्थात् ऐल्लक एक लंगोटी धारण करें, क्षुल्लक एक लंगोटी और एक दुपट्टा धारण करें, क्षुल्लिका एक साड़ी एवं एक दुपट्टा।)
5. **ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः** मंत्र की 21 अथवा 108 मंत्र पढ़ते हुए दीक्षार्थि के सिर पर लोंग छेपण करें।
6. 11 प्रतिमा के व्रत दे। पिच्छी, शास्त्र, कमण्डल, वस्त्र, कटोरा प्रदान करें।
7. शांतिभक्ति, समाधि भक्ति पढ़े।

विस्तार से लघु दीक्षा विधि

वृहद दीक्षा विधि से नं. 1 नं. से 21 नं. तक की विधि को यहाँ भी यथावत् समझें। विस्तार में वृहद दीक्षा विधि देखें।

शांति मंत्र -

मंत्र ऊँ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष-कल्मषाय दिव्यतेजो-मूत्तेये नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकाय सर्वविघ्न-प्रणाशनाय सर्वरोगाप-मृत्यु-विनाशनाय, सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्व-क्षामडामर-विनाशनाय ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा (दीक्षित व्यक्ति का नाम) सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

1. आचार्य दीक्षार्थी के सिर को बांये हाथ से स्पर्श करें।
2. अक्षतों (सफेद चावलों) को सिर पर रखते हुए वर्धमान मंत्र पढ़े।

वर्धमान मंत्र-

ऊँ णमो भयवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं, पायालं, लोयाणं, भूयाणं, जये वा, विवादे वा, थंभणे वा, रणंगणे वा, रायंगणे वा, मोहेण वा, सव्वजीवसत्ताणं, अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा।

दंसणवयसामाइय, पोसहसचित्तइभत्ते य।
बंभारंभपरिग्गह, अणुमणुममुद्दिट्ठदेसविरदेदे।।

1. उक्त गाथा को तीन बार पढ़कर यथा सम्भव व्याख्या करें।
2. गुर्वावली पढ़कर नामकरण संस्कार करें।

अथ गुर्वावलीं

श्री मूल-संघे, कुन्दकुन्दाम्नाये, बलात्कार-गणे, सरस्वती-गच्छे, नन्दी-संघस्य परम्परायाम्, श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री - महावीरकीर्तिआचार्या-जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विरागसागराचार्य जातास्तत् शिष्या... अहम् (अपना नाम बोलना) जाताः।

जम्बूवृक्षोपलक्षित जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे, आर्य खण्डे भारतदेशे..... प्रान्ते....नगरे 1008 श्री....जिन-चैत्यालयमध्ये, अद्य, वीर निर्वाण सं..... वि.सं..... मासोत्तममासे.... मासे.... पक्षे.... शुभ तिथौ.... वासरे पौर्वाह्लिक/आपराह्लिक काले, दीक्षा अवसरे त्वं (दीक्षार्थी का नाम

रखते हुए) मम शिष्यः कल्याणभागि भवः (भूयात्)।

29. दीक्षार्थी को निम्न मंत्र बोलते हुए पिच्छी, शास्त्र एवं कमण्डल प्रदान करें।

संयमोपकरण मंत्र- आचार्य- पिच्छी को गंधोदक से सिंचितकर केशर से स्वास्तिक लिखें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए दोनों हाथ से पिच्छीकाप्रदान करें। दीक्षार्थी भी गुरु के हाथ से दी गई पिच्छी को दोनों हाथ से ग्रहण करें। (यदि कोई दाता पूर्व निर्धारित हो तो वह भी हाथ लगाये।)

ऊँ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं'

भो अन्तेवासिन! षड्जीवनिकायरक्षणाय मार्दववादिगुणोपेतमिदं पिच्छिकोपकरणं गृहाणं गृहाणेति।

आचार्य- शास्त्र पर केशर से स्वास्तिक लिखें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए दोनों हाथ से दीक्षार्थी को शास्त्रप्रदान करें। दीक्षार्थी भी गुरु के हाथ से दीया गया शास्त्र को दानों हाथ से ग्रहण करें। (यदि कोई दाता पूर्व निर्धारित हो तो वह भी हाथ लगाये।)

ऊँ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं'

मतिश्रुतावधि मनः पर्यय-केवलज्ञानाय द्वादशांगश्रुताय नमः। भो अन्नेवासिन्! इदं ज्ञानोपकरणं गृहाण गृहाणेति।

आचार्य- कमण्डल को गंधोदक से सिंचितकर केशर से स्वास्तिक लिखें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए बायें हाथ से दीक्षार्थी को कमण्डल प्रदान करें। दीक्षार्थी भी गुरु के हाथ से दीया गया कमण्डल बायें हाथ से से ग्रहण करें। (यदि कोई दाता पूर्व निर्धारित हो तो वह भी हाथ लगाये।)

ऊँ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं'

रत्नत्रयपवित्रीकरणांगाय बाह्याभ्यनतर मल-शुद्धाय नमः भो अनतेवासिन् इदं शौचोपकरणं! गृहाण गृहाणेति।

30. आचार्य एवं दीक्षार्थी समाधि भक्ति पढ़े।

उपाध्याय पद दान विधि

1. शुभ मुहूर्त में दातागण गणधरवलय विधान तथा द्वादशांगश्रुत अर्चना करें।
2. श्री खण्डादि के द्वारा सिंचनकर चावलों से स्वास्तिक बनायें।
3. 1 × 1 मीटर वस्त्र पर स्वास्तिक बनाकर चावल के स्वास्तिक पर बिछायें।
4. वस्त्र पर पूर्वाभिमुख होकर उपाध्याय पद योग्य मुनि विराजमान कर सिद्धभक्ति पढ़े (देखें पृ.....)।

अथ उपाध्याय पद स्थापना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''सिद्धभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं।

5. श्रुतभक्ति पढ़े (देखें पृ....)

अथ उपाध्याय पद स्थापना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''श्रुतभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं।

6. इसके बाद आह्वानादि मंत्रों का उच्चारण कर सिर पर लोंग, पुष्प, अक्षत, रखें।

आह्वानन मंत्र- ऊँ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, उपाध्यायपरमेष्ठिन, अत्र एहि एहि संवौषट् इति आह्वानन्।

ऊँ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, उपाध्यायपरमेष्ठिन, अत्र एहि एहि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ऊँ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, उपाध्यायपरमेष्ठिन, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

7. **तद्न्तर चंदन का सिंचन करते हुए निम्न मंत्रों का 108 जाप करें।**

मंत्र- ''ऊँ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, उपाध्यायपरमेष्ठिने नमः''।

8. शांति भक्ति पढ़े (शांति भक्ति देखे पृ.....)

अथ उपाध्याय पद स्थापना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''शांतिभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं।

9. समाधि भक्ति पढ़े (समाधि भक्ति देखे पृ.....)

अथ उपाध्याय पद स्थापना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, शांतिभक्ति कृत्वा तद्हीनाधिक दोष विशुद्धयर्थं ''समाधिभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं।

10. नूतनउपाध्याय मुनि गुरुभक्ति करें (आचार्य वंदना करें)।
11. प्रणाम करते हुए प्रमुख दाताओं (श्रावकों) को आशीर्वाद दें।

।। इति उपाध्याय पद दान विधि।।

आचार्य पद स्थापन विधि

1. शुभ मुहूर्त में दातागण गणधरवलय विधान अर्चना करें।
2. श्री खण्डादि के द्वारा सिंचनकर चावलों से स्वास्तिक बनायें।
3. 1 × 1 मीटर वस्त्र पर स्वास्तिक बनाकर चावल के स्वास्तिक पर बिछायें।
4. वस्त्र पर पूर्वाभिमुख होकर आचार्य पद योग्य मुनि विराजमान कर सिद्धभक्ति पढ़े।

अथ आचार्य पद स्थापना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''सिद्धभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं। (देखें सिद्धभक्ति पृ....)

5. आचार्यभक्ति पढ़े

अथ आचार्य पद स्थापना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''आचार्यभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं। (देखें आचार्यभक्ति पृ....)

6. **दाता निम्नलिखित मंत्र पढ़कर 5 कलशों के जल से नूतन आचार्य के दोनों चरणों का प्रछालन करें।**

मंत्र-ऊँ ह्रूँ, परम सुरभिद्रव्य सन्दर्भ परिमलगर्भ तीर्थाम्बुसम्पूर्णसुवर्णकलश पंचकतोयेन परिषेचयामिति स्वाहा।

7. पण्डिताचार्य 'निर्वेद सौष्ठ' इत्यादि महर्षि स्तवन पढ़ते हुए दोनों चरणों को स्पर्श करते हुए, गुणरोपण करें। (36 गुणों का आरोपण करें।) तद्न्तर निम्न प्रकार से आचार्य मंत्र द्वारा आह्वानन् करें।

मंत्र :**आह्वानन मंत्र- ऊँ ह्रूं णमो आरियाणं, आचार्यपरमेष्ठिन! अत्र एहि एहि संवौषट् इति आह्वानन्।**

ऊँ ह्रूं णमो आरियाणं, आचार्यपरमेष्ठिन! अत्र एहि एहि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ऊँ ह्रूं णमो आरियाणं, आचार्यपरमेष्ठिन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

8. निम्नमंत्र द्वारा चंदन से दोनों चरणों में तिलक करें।

मंत्र - 'ऊँ ह्रूं णमो आरियाणं, धर्माचार्याधिपतये नमः'

9. शांति भक्ति पढ़े (शांति भक्ति देखे पृ.....)

अथ आचार्य पद स्थापना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री ''शांतिभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं।

10. समाधि भक्ति पढ़े (समाधि भक्ति देखे पृ.....)

अथ आचार्य पद स्थापना क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षायार्थं भावपूजा वंदना स्तव समेतं श्री सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, शांतिभक्ति कृत्वा तद्हीनाधिक दोष विशुद्धयर्थं ''समाधिभक्ति'' कायोत्सर्गं करोम्यहं।

11. नूतनउपाध्याय मुनि गुरुभक्ति करें (आचार्य वंदना करें)।

12. प्रणाम करते हुए प्रमुख दाताओं (श्रावकों) को आशीर्वाद दें।

आचार्यमंत्र - 1. ऊँ ह्रां ह्रीं श्रीं अर्हम् हं सः आचार्यय नमः। आचार्यवाचना मंत्र।

2. ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हम् हं सः आचार्याय नमः।

।। इति आचार्य पद स्थापन विधि।।